B.A. PART-1.
हिन्दी (प्रतिष्ठा) द्वितीय-पत्र
हिन्दी साहित्य का इतिहास (मध्ययुगीन इतिहास एवं काव्य)
(आधुनिक काल)

प्रश्न:- आधुनिक काल : सीमांकन एवं वर्गीकरण पर प्रकाश डालें ?

उत्तर:- आधुनिक काल का प्रारम्भ कब से माना जाय ? यह एक जटिल प्रश्न है, क्योंकि दो कालों के बीच में कोई एक ऐसी निश्चित सीमा रेखा नहीं खींची जा सकती जिसके एक ओर एक कालखण्ड और दूसरी ओर दूसरा कालखण्ड हो। यही कारण है कि आधुनिक काल का सीमांकन करने में विद्वानों में मतभेद रहा है। मिश्र बंधुओं ने जहाँ इसका प्रारम्भ 1926 विक्रमी से माना है, वहीं आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने 1900 वि० से माना है। डॉ० गणपतिचंद्र गुप्त इस काल का आरम्भ सन् 1857 ई० (1914 वि०) से मानना उपयुक्त समझते हैं। उनका मत है कि 1857 ई० में राजनीतिक दृष्टि से जहाँ भारत का प्रथम स्वतंत्रता संग्राम प्रारम्भ हुआ, वहीं साहित्यिक दृष्टि से भी परिवर्तन शुरू हो गया था और रीतिकालीन प्रवृत्तियाँ ह्रासोन्मुख हो गई थीं। भारतेन्दु बाबू हरिश्चन्द्र का जन्म 1850 ई० में हुआ तथा उन्होंने अपनी रचनाएँ सात वर्ष की अवस्था से ही लिखनी शुरू कर दी थीं, अतः आधुनिक काल के जनक भारतेन्दु जी के रचनाकाल को दृष्टिगत रखकर 1857 ई० से ही आधुनिक काल का प्रारम्भ मानना समीचीन प्रतीत होता है। दूसरी ओर आचार्य शुक्ल ने 1900 वि० की जो सीमा दी है, वह इतिहास के अध्येताओं के लिए सुविधाजनक भी है और डॉ० गणपतिचंद्र गुप्त के मत से कोई बहुत अन्तर भी नहीं रखती, अतः शुक्ल जी के मत को अनुपयुक्त कहने का कोई पुष्ट आधार नहीं है।

आधुनिक काल के साहित्य का वर्गीकरण विद्वानों ने विभिन्न प्रकार से किया है। सुविधा की दृष्टि से हम इस कालखण्ड के दो विभाग कर सकते हैं— पद्य खण्ड और गद्य खण्ड। पद्य खण्ड के पुनः कई उपविभाग किए जा सकते हैं, जिन्हें आधुनिक हिन्दी काव्य के विकास के रूप में निम्नलिखित प्रकार से वर्गीकृत किया जा सकता है—

P.T.O

1. भारतेन्दु युग (सन् 1857 ई० से 1900 ई० तक)
2. द्विवेदी युग (सन् 1900 ई० से 1920 ई० तक)
3. छायावादी युग (सन् 1920 ई० से 1936 ई० तक)
4. प्रगतिवादी युग (सन् 1936 ई० से 1943 ई० तक)
5. प्रयोगवादी युग (सन् 1943 ई० से 1953 ई० तक
6. नई कविता (सन् 1953 ई०)

आधुनिक काल का उपविभाजन निम्न प्रकार से भी किया गया है—

1. पुनर्जागरण काल अथवा भारतेन्दु युग (1857 ई० – 1900 ई०)
2. जागरण सुधार काल अथवा द्विवेदी युग (1900 ई० – 1920 ई०)
3. छायावाद (1920 ई० – 1936 ई०)
4. छायावादोत्तर काल—

(अ) प्रगतिवाद (1936 ई० – 1943 ई०)
(ब) प्रयोगवाद (1943 ई० – 1953 ई०)
(स) नई कविता (1953 ई० के उपरान्त)
(द) नवगीत
(ध) समकालीन कविता

दूसरी ओर गद्य खण्ड के अन्तर्गत अनेक गद्य-विधाओं का सूत्रपात हुआ, जिन्हें निम्नलिखित वर्गों में विभाजित करके समझा जा सकता है—

1. हिन्दी गद्य का विकास
2. हिन्दी निबन्ध का विकास
3. हिन्दी उपन्यास का विकास
4. हिन्दी कहानी का विकास
5. हिन्दी नाटक का विकास
6. हिन्दी एकांकी का विकास
7. हिन्दी आलोचना का विकास
8. हिन्दी संस्मरण साहित्य
9. हिन्दी रेखाचित्र साहित्य
10. हिन्दी आत्मकथा एवं जीवनी साहित्य
11. हिन्दी इंटरव्यू साहित्य

12. हिन्दी पत्र लेखन, डायरी लेखन आदि

अभ्यासार्थ प्रश्न

प्रश्न: आधुनिक काल: सीमांकन एवं वर्गीकरण पर एक नोट लिखें?

पता:-
डॉ० समदर्शी कुमार, विभाग- हिन्दी (S.R.A.P.C)(B.R.A.B.U.M)
दिनांक - 02.02.2023, मो०न०- 7909046087